जीवन कर्ज और अकेलेपन से ग्रस्त

राजन बाई*

आज अधिकांश लोगों का जीवन कर्ज और अकेलेपन की दुविधा में गुजर रहा है। जहां पहले टीवी ने लोगों को एक दूसरे से दूर करने में भूमिका निभाई थी वहीं अब मोबाइल ने रही सही कसर को पूरा कर दिया है। अब तो एक ही कमरे में बैठे लोग अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त दिखाई देते है। ऐसा नहीं है कि जीवन में विज्ञान की उपयोगिता नहीं है। उपयोगिता है, किन्तु किसी भी वस्तु की अत्यधिक उपयोग उचित नहीं होती, इस तथ्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता। दैनिक जीवन में बहुत अधिक बोलना, बहुत कम बोलना और बहुत अधिक खाना, बहुत कम खाना दोनों ही स्थितियां सामान्य जीवन के लिए उपयुक्त नहीं है। जीवन में संतुलन का होना आवश्यक होता है। विज्ञान की अत्यधिक उपयोगिता और सुविधा ने मानव जीवन को अकेलेपन से भर दिया है। उसे अब एक दूसरे की आवश्यकता नहीं रही। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि

पहले कमरा एक होता था बच्चे चार,
घर में होता था बहुत मर्यादा और प्यार।
अब बच्चा एक और कमरे चार,
न मर्यादा न प्यार।

पहले बच्चे माता-पिता की परेशानी को समझते थे और सहयोग करते थे। अब बच्चे माता-पिता को परेशानी में डालते हैं और सहयोग मांगते हैं। परिस्थितियों के इस बदलाव को क्या कहें प्यार या स्वार्थ? यह सोचनीय विषय है।

आज बच्चा गमले में उगे हुए पौधे के समान हो गया है, वह पेड़ नहीं बन पाया है। आज के युवा का दिमाग भले ही विकसित हो रहा है, किन्तु हृदय का ह्रास हो रहा है। जबकि स्वस्थ शरीर के लिए दोनों का संतुलित होना आवश्यक होता है। इस भूमंडलीकरण और अर्थतंत्र के यांत्रिक युग में आज का युवा यंत्रों का निर्माण करते-करते स्वयं यंत्र बनता जा रहा है। उसके सपने भी यंत्रों में ही समाहित है। वह दौड़ रहा है, लेकिन जी नहीं पा रहा है। पाश्चात्यकरण की सुविधाओं की प्राप्ति की अंधी दौड़ में उसे कर्ज लेने में भी किसी प्रकार का संकोच नहीं। अपनी संस्कृति और नैतिक मूल्यों की आहुति देने में भी उसे कोई आपत्ति नहीं होती। वह नैतिक मूल्यहीनता से परिपूर्ण हो रहा है।

माता-पिता की सम्पत्ति पर यदि उसे अधिकार चाहिए तो उसे माता-पिता के प्रति अपने नैतिक कर्तव्यों का पालन भी करना चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि उनके पालन-पोषण में वे कब जवानी से वे बुढ़ापे में पहुंच गए। इसलिए युवाओं को चाहिए कि वह अपना दायित्व समझते हुए, उन्हें सहयोग दें और उनकी भावनाओं का मान-सम्मान रखें।

* सहायक प्रोफेसर
दिल्ली विश्वविद्यालय

समाज में पहले संयुक्त परिवार थे तो खुशियां थी, अब एकांकी परिवार आ गए तो खुशियां भी एकाकी हो गई है। जीवन में अकेलापन इतना अधिक हो गया है कि पति-पत्नी दोनों एक ही कमरे में रहते हुए भी अकेलापन महसूस करते हैं। अब सुख हो या दुःख व्यक्ति को अकेले ही झेलना पड़ता है। अधिक धन और अधिक स्वतंत्रता उच्छृंखलता को जन्म देती है। जीवन का यही अकेलापन और कर्ज जानलेवा सिद्ध हो जाता है, इसलिए मेरा युवावर्ग से आग्रह है कि यदि वह जीवन के अकेलेपन और नैतिक कर्ज से मुक्ति चाहते हैं तो माता-पिता की खुशियां का मान-सम्मान करें

कभी डरते थे बच्चे अकेले में,
अब डरते हैं माता-पिता अकेले में।
कभी माता-पिता थामते उंगली बच्चे की,
अब थामें बच्चे, उंगली माता-पिता की।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाजिक नैतिकता को निभा कर ही अपने जीवन को खुशहाल बना सकता है।

पहले अभाव में खुशियां थी,
अब खुशियों का अभाव है।

❐❐❐

मध्यम वर्गीय प्रेम

निधि सीकरी*

मिडिल क्लास पति पत्नी से प्यार जाहिर करने के लिए उसे विवाह की प्रथम वर्षगांठ पर गोवा या मालदीव्स नहीं ले जा सकता। सिर्फ पैसे की किल्लत ही नहीं,परिवार की झिझक और संस्कार भी तो होते हैं ना। वो रात में घर में जब सब सो जाते हैं तब ऑफिस वाले लैपटॉप बैग से चाँदी की एक जोड़ी पायल, इमदजमस्त्र का आर्टिफिशियल सेट और एक डेरी मिल्क चॉकलेटधीरे से निकाल कर पत्नी को देता है और उसके माथे पर पसीने से फैल चुके सिंदूर को उँगलियों से पोछते हुए खुद से वादा करता है कि अगली गर्मी से पहले वो एसी खरीद लाएगा और शर्ट की जेब टटोल कर 5000 रुपये हाथ में देते हुए कहता है, घर जाओगी न तो मम्मी और भाभी के लिए कुछ खरीद लेना,क्या पता तब हाथ में पैसे रहे न रहे।

हर कोई चाहता है प्यार में ताजमहल बनाना परंतु जीवन का सच है दो टाइम की रोटी का जुगाड़ लगाना जिंदगी तब बहुत आसान हो जाती है, जब साथी परखने वाला नहीं....! बल्कि समझने वाला साथ हो...!!

❐❐❐

* वरिष्ठ सहायक, केशव महाविद्यालय